मेन्स मास्टर

स्वामीनाथन पैनल ने क्या कहा?

प्रसंग:

• **किसान विरोध**: पंजाब के हजारों किसान विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, सभी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी और स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के आधार पर मूल्य निर्धारण के कार्यान्वयन की मांग कर रहे हैं। ये विरोध प्रदर्शन किसानों की आय और उनकी आजीविका सुनिश्चित करने में एमएसपी की भूमिका के बारे में चल रही बहस को उजागर करते हैं।

• **स्वामीनाथन आयोग**: 2004 में कृषि वैज्ञानिक एम.एस. के नेतृत्व में स्थापित किया गया। स्वामीनाथन आयोग का उद्देश्य किसानों के संकट को दूर करना और उनकी आय और आजीविका में सुधार के लिए रणनीतियां सुझाना था। उनकी सिफारिशों में मूल्य निर्धारण, विपणन और बुनियादी ढांचे के विकास सहित कृषि के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया।

पृष्ठभूमि:

• **पाँच रिपोर्टें**: 2004 और 2006 के बीच, स्वामीनाथन आयोग ने कुल 1,946 पृष्ठों की पाँच व्यापक रिपोर्टें प्रस्तुत कीं। इन रिपोर्टों में किसानों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों और विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तावित समाधानों का विश्लेषण किया गया।

• **किसान कल्याण फोकस**: जबकि वर्तमान विरोध मुख्य रूप से एमएसपी पर केंद्रित है, स्वामीनाथन आयोग ने किसान कल्याण में समग्र सुधार की आवश्यकता को पहचानते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया। उनकी सिफारिशों का उद्देश्य कृषि की उत्पादकता, लाभप्रदता और स्थिरता को बढ़ाना है, जिससे किसानों की आजीविका में सुधार होगा।

स्वामीनाथन आयोग की एमएसपी सिफारिशें:

• **कोई कानूनी गारंटी नहीं**: आयोग ने लचीलेपन की आवश्यकता पर जोर देते हुए और विभिन्न बाजार कारकों पर विचार करते हुए एमएसपी के लिए कानूनी जनादेश की सिफारिश नहीं की। हालाँकि, उन्होंने मौजूदा प्रणाली में मजबूत कार्यान्वयन और सुधार की वकालत की।

• **C2+50% फॉर्मूला का समर्थन नहीं किया गया**: विवादास्पद C2+50% फॉर्मूला, जो एमएसपी को उत्पादन की कुल लागत (लगाए गए लागत सहित) से कम से कम 50% अधिक करने की मांग करता है, आयोग द्वारा सीधे समर्थन नहीं किया गया था। उनका ध्यान विभिन्न लागत कारकों के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने पर था।

• **बेहतर क्षेत्रीय कार्यान्वयन:** आयोग ने विभिन्न क्षेत्रों में एमएसपी कार्यान्वयन में असमानता को पहचाना। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए बेहतर तंत्र का आह्वान किया कि देश भर के किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले।

• **अतिरिक्त लागत कारकों पर विचार**: वर्तमान एमएसपी गणना मुख्य रूप से उत्पादन की भारित औसत लागत (ए2+एफएल) पर केंद्रित है, जिसमें पारिवारिक श्रम और भूमि पर किराया जैसी अनुमानित लागत शामिल नहीं है। आयोग ने भविष्य में एमएसपी निर्धारण में इन कारकों पर विचार करने की सिफारिश की।

• **खरीद मंजिल के रूप में एमएसपी:** उन्होंने सरकारी और निजी खरीद दोनों के लिए न्यूनतम मूल्य के रूप में एमएसपी का उपयोग करने का सुझाव दिया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि किसानों को उनकी उपज के लिए कम से कम वह राशि मिले। इसके अतिरिक्त, उन्होंने प्रारंभिक एमएसपी घोषणा के बाद लागत वृद्धि के आधार पर खरीद मूल्य को समायोजित करने की वकालत की।

• **स्वायत्त सीएसीपी:** आयोग ने व्यापक लागत विश्लेषण और बाजार की गतिशीलता के आधार पर लाभकारी कीमतों की सिफारिश करने के लिए कृषि लागत और मूल्य (सीएसीपी) के लिए एक स्वतंत्र आयोग की आवश्यकता पर जोर दिया।

• **लाभकारी मूल्य निर्धारण:** एक निश्चित फॉर्मूले के बजाय, आयोग ने एक ऐसी प्रणाली का लक्ष्य रखा जो यह सुनिश्चित करे कि किसानों को लाभकारी मूल्य प्राप्त हो जो उनकी लागत को कवर करे और उचित लाभ मार्जिन प्रदान करे।

• **किसानों की आय समानता:** उनका दीर्घकालिक दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करना था कि किसानों की आय सिविल सेवकों जैसे समाज के अन्य वर्गों के बराबर हो, जो खाद्य सुरक्षा और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाती हो।

वर्तमान एमएसपी गणना:

• **ए2+एफएल लागत:** वर्तमान प्रणाली मुख्य रूप से उत्पादन की भारित औसत लागत (ए2+एफएल) पर विचार करती है, जिसमें किसानों द्वारा श्रम, इनपुट और मशीनरी के लिए किए गए वास्तविक खर्च शामिल होते हैं।

• **आरोपित लागतों को बाहर रखा गया:** यह प्रणाली अवैतनिक पारिवारिक श्रम के मूल्य और स्वामित्व वाली भूमि पर किराए जैसी आरोपित लागतों को ध्यान में नहीं रखती है, जो संभावित रूप से उत्पादन की वास्तविक लागत को कम करके आंकती है।

• **जोखिम और अन्य कारकों की अनदेखी:** वर्तमान एमएसपी गणना में बाजार जोखिम, विपणन व्यय और फसल के बाद के नुकसान जैसे अतिरिक्त कारकों पर स्पष्ट रूप से विचार नहीं किया जाता है।

समग्र आउटलुक:

• **व्यापक फोकस:** जबकि वर्तमान विरोध एमएसपी मुद्दे को उजागर करता है, स्वामीनाथन आयोग ने केवल मूल्य निर्धारण से परे किसान कल्याण में सुधार के लिए सिफारिशों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश की है।

• **कार्यान्वयन में अंतराल**: वर्तमान एमएसपी गणना कई पहलुओं में आयोग की सिफारिशों से भिन्न है, जो कार्यान्वयन में सुधार की गुंजाइश का सुझाव देती है।

• **चल रही बहस:** एमएसपी और सी2+50% फॉर्मूले के लिए कानूनी गारंटी पर बहस जारी है, जिसमें विभिन्न हितधारक किसानों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण का प्रस्ताव दे रहे हैं।

क्या भारत वैश्विक रिफाइनिंग केंद्र बन सकता है?

अवलोकन:

• **वर्तमान स्थिति:** भारत वैश्विक स्तर पर चौथा सबसे बड़ा रिफाइनिंग उद्योग होने का दावा करता है, जिसकी क्षमता 254 मिलियन मीट्रिक टन प्रति वर्ष (एमएमटीपीए) है। हालाँकि, यह आयात पर एक महत्वपूर्ण निर्भरता को छुपाता है, कच्चे तेल की 85% ज़रूरतें बाहरी स्रोतों से प्राप्त होती हैं।

• **सरकार का दृष्टिकोण:** पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण सीमित नई पश्चिमी रिफाइनरी परियोजनाओं द्वारा प्रस्तुत अवसर को पहचानते हुए, भारत सरकार का लक्ष्य देश को एक वैश्विक रिफाइनिंग केंद्र में बदलना है।

अवसर:

• **घरेलू मांग में उछाल:** परिष्कृत उत्पादों के लिए भारत की घरेलू मांग बढ़ने का अनुमान है, जो 2045 तक 8.1 मिलियन बैरल प्रति दिन (एमएमबी/डी) तक पहुंच जाएगी। यह घरेलू रिफाइनरों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है।

• **भू-राजनीतिक लाभ:** रूस के खिलाफ पश्चिमी प्रतिबंधों ने परिष्कृत उत्पादों के बाजार में एक अंतर पैदा कर दिया है। रूसी कच्चे तेल को आयात करने और उसे परिष्कृत करने की भारत की क्षमता देश को पश्चिमी उपभोक्ताओं के लिए एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित कर सकती है।

• **भुगतान संतुलन:** कच्चे तेल और उत्पाद आयात और निर्यात को रणनीतिक रूप से संतुलित करके, भारत अपने भुगतान संतुलन में सुधार करने और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की क्षमता रखता है।

ऐतिहासिक विकास:

• **महत्वपूर्ण वृद्धि:** 1998 के बाद से, भारत की रिफाइनिंग क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो 62 एमएमटीपीए से बढ़कर 254 एमएमटीपीए हो गई है।

• **अधूरा लक्ष्य:** 2015 में, प्रधान मंत्री मोदी ने 2023 तक आयात निर्भरता को कम करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा, लेकिन यह लक्ष्य अभी भी अधूरा है।

• **2030 विजन:** निडर, वर्तमान लक्ष्य 2030 तक रिफाइनिंग क्षमता को 450 एमएमटीपीए तक बढ़ाना है।

चुनौतियाँ:

• **कच्चे तेल को सुरक्षित करना:** उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए दीर्घकालिक कच्चे तेल की आपूर्ति को सुरक्षित करना आवश्यक है, जो भारत की उच्च आयात निर्भरता को देखते हुए एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश करता है।

• **विकास और स्थिरता को संतुलित करना:** जबकि रिफाइनिंग क्षमता का विस्तार आर्थिक लाभ प्रदान करता है, इस विकास को नेट-शून्य लक्ष्यों और ऊर्जा सुरक्षा चिंताओं के साथ संतुलित करना महत्वपूर्ण है। निर्यात-केंद्रित विस्तार इन लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हो सकता है।

• **ग्रीनफील्ड का वित्तपोषण:** नई ग्रीनफील्ड रिफाइनरियों की निर्माण अवधि लंबी होती है और इसके लिए पर्याप्त निवेश की आवश्यकता होती है। इन परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण आकर्षित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर जलवायु के प्रति जागरूक दुनिया में।

वर्तमान स्थिति:

• **शुद्ध निर्यातक:** वर्तमान में, भारत परिष्कृत उत्पादों के शुद्ध निर्यातक के रूप में कार्य करता है, जिसका निर्यात 2022 में 1 MMb/d के करीब है।

• **बढ़ती आयात निर्भरता:** शुद्ध निर्यातक होने के बावजूद, भारत की कच्चे तेल आयात निर्भरता में वृद्धि जारी है, जो 2022 में लगभग 90% तक पहुंच गई है।

• **रणनीतिक साझेदारी:** प्रमुख तेल उत्पादकों के साथ मजबूत रणनीतिक संबंध बनाना और बनाए रखना और रणनीतिक भंडारण सुविधाएं विकसित करना ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विश्व नेता बनना:

• **दीर्घकालिक रणनीति:** वास्तव में एक वैश्विक रिफाइनिंग लीडर बनने के लिए, भारत को एक सतत और दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है जो राजनयिक संबंधों, आर्थिक हितों और विविध ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता को ध्यान से रखे।

• **बहु-आयामी दृष्टिकोण:** इस रणनीति में घरेलू तेल उत्पादन को पुनर्जीवित करना, जैव ईंधन को बढ़ावा देना, इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने को प्रोत्साहित करना और प्रमुख तेल उत्पादकों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाना जैसे प्रयासों का संयोजन शामिल हो सकता है।

• **दूसरों से सीखना:** उत्पाद निर्यात को सीमित करने और रिफाइनरी क्षमता में वृद्धि के प्रबंधन का चीन का दृष्टिकोण भारत की विकास रणनीति के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करता है।

• **अद्वितीय चुनौतियाँ:** हालाँकि, भारत के अद्वितीय विकास पथ, नौकरी बाजार के विचार और राजकोषीय दबावों के लिए एक अनुरूप दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो चीन के मॉडल से भिन्न है।

प्रीलिम्स बूस्टर

लाल टीमिंग

- 🛡️ माइक्रोसॉफ्ट द्वारा समर्थित ओपनएआई ने सोरा पेश किया, जो एक क्रांतिकारी सॉफ्टवेयर है, जो टेक्स्ट प्रॉम्प्ट के आधार पर मिनट-लंबे वीडियो बनाने में सक्षम है, जो साइबर सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ के साथ एक अभूतपूर्व विकास को चिह्नित करता है, खासकर रेड टीमिंग के क्षेत्र में।
- 🛠️ रेड टीमिंग, साइबर सुरक्षा के संदर्भ में, एक सक्रिय सुरक्षा जोखिम मूल्यांकन सेवा के रूप में कार्य करती है, जिसमें अधिकृत एथिकल हैकर विशिष्ट उद्देश्यों के साथ लक्षित हमलों का विरोध करने के लिए एक संगठन की क्षमता का आकलन करने के लिए परिष्कृत हमलावरों का अनुकरण करते हैं, जो भेदता मूल्यांकन जैसी पारंपरिक सुरक्षा परीक्षण सेवाओं से परे जाते हैं। भेदन परीक्षण।
- 📊 भेद्यता आकलन और पैठ परीक्षण एक नेटवर्क के भीतर तकनीकी खामियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि रेड टीम अभ्यास, सोरा जैसे उपकरणों द्वारा बढ़ाया गया, एक संगठन की समग्र आईटी सुरक्षा स्थिति का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करता है, एक संगठन के लोगों, प्रक्रियाओं, कितनी अच्छी तरह से कार्य करने योग्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। और प्रौद्योगिकियाँ परिष्कृत साइबर खतरों का सामना कर सकती हैं।

LAC पर चीन के 'रक्षा गांव', जिन्हें वह आबाद कर रहा है

🏘️ज़ियाओकांग सीमा रक्षा गांवों पर कब्ज़ा:
चीनी लोगों ने भारत-चीन सीमा पर ज़ियाओकांग सीमा रक्षा गांवों पर कब्जा करना शुरू कर दिया है, खासकर पूर्वोत्तर क्षेत्र में, 2019 में निर्माण शुरू होने के साथ और निवासी अब लोहित घाटी और तवांग के सामने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के साथ गांवों में जा रहे हैं। अरुणाचल प्रदेश का क्षेत्र.

🌐ज़ियाओकांग सीमा रक्षा गांवों का अवलोकन:
चीन ने पिछले पांच वर्षों में तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के साथ भारत की सीमाओं पर 628 ज़ियाओकांग या "समृद्ध गांवों" का निर्माण किया है, जिनमें ज्यादातर दो मंजिला, बड़ी और विशाल इमारतें हैं, जिनके सटीक उद्देश्य अस्पष्ट हैं लेकिन दोहरे उपयोग वाले माने जाते हैं। बुनियादी ढाँचा, रक्षा दृष्टिकोण से चिंताएँ बढ़ाना।

📜चीन की भूमि सीमाओं पर नया कानून:
चीन की भूमि सीमाओं पर एक नया कानून, 1 जनवरी, 2022 से प्रभावी, सीमा रक्षा को मजबूत करने, आर्थिक और सामाजिक विकास का समर्थन करने, सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे में सुधार करने और ज़ियाओकांग को कवर करने वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में सीमा रक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास के बीच समन्वय को बढ़ावा देने पर जोर देता है। सीमा रक्षा ग्राम कार्यक्रम.

🇮🇳 भारत की प्रतिक्रिया - जीवंत गांव कार्यक्रम:
जवाब में, भारत सरकार ने सीमावर्ती गांवों को आधुनिक गांवों और पर्यटक आकर्षणों में विकसित करने के लिए 2022 में वाइब्रेंट विलेजेज कार्यक्रम शुरू किया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के तहत मौजूदा सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम (बीएडीपी) पर आधारित है, जिसमें 663 सीमावर्ती गांवों को विकसित करने की योजना है। पहले चरण में चीन-भारत सीमा से लगे 17 गांवों को पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया है।

🏗️ भारत के पूर्वोत्तर में चीन द्वारा बुनियादी ढाँचा विकास:
चीन अरुणाचल प्रदेश के तवांग क्षेत्र और सियांग घाटी सहित वास्तविक नियंत्रण रेखा पर लगातार बुनियादी ढांचे का विकास कर रहा है, दर्रों के माध्यम से कनेक्टिविटी में सुधार के लिए सड़कों, पुलों और घरों के निर्माण जैसी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जिससे भारत को मजबूती पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसकी सीमा अवसंरचना, नई सड़कों, पुलों और हेलीपैडों का निर्माण, और विशेष रूप से उत्तर-पूर्व में वास्तविक नियंत्रण रेखा के लिए वैकल्पिक मार्ग विकसित करना।

इसरो का 'शरारती लड़का' रॉकेट आज भारत का नवीनतम मौसम उपग्रह लॉन्च करेगा

- 🚀 जियोसिंक्रोनस लॉन्च व्हीकल (जीएसएलवी), जिसे इसके धब्बेदार रिकॉर्ड के लिए "शरारती लड़का" कहा जाता है, शनिवार शाम 5.35 बजे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरने के लिए तैयार है, जो कुल मिलाकर इसका 16 वां मिशन और स्वदेशी तकनीक का उपयोग करके इसकी 10 वीं उड़ान है। क्रायोजेनिक इंजन विकसित किया।
- 🌍 मिशन की सफलता जीएसएलवी के लिए महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि यह इस वर्ष के अंत में नासा और इसरो द्वारा संयुक्त रूप से विकसित पृथ्वी अवलोकन उपग्रह, एनआईएसएआर को ले जाने वाला है। एनआईएसएआर का लक्ष्य 12 दिनों में पूरे विश्व का मानचित्रण करना और पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र में परिवर्तन, बर्फ के द्रव्यमान, समुद्र के स्तर में वृद्धि और भूकंप और सुनामी जैसे प्राकृतिक खतरों को समझने के लिए "स्थानिक और अस्थायी रूप से सुसंगत" डेटा प्रदान करना है।
- 📡 INSAT-3DS, 10 साल के मिशन जीवन के साथ 2,274 किलोग्राम का उपग्रह, 36,647 किमी x 170 किमी अण्डाकार कक्षा में लॉन्च किया जाएगा। एक बार चालू होने के बाद, यह भूमि और महासागर दोनों सतहों का उन्नत मौसम अवलोकन प्रदान करेगा, चरम मौसम की घटनाओं के कम दूरी के पूर्वानुमानों में सहायता करेगा, विमानन के लिए दृश्यता अनुमान, और जंगल की आग, धुएं और बर्फ के आवरण का अध्ययन करेगा।
- 🛰️ जीएसएलवी का उपयोग करके अब तक किए गए 15 प्रक्षेपणों में से कम से कम चार असफल रहे हैं, जो आगामी मिशन की सफलता के महत्व को उजागर करता है। इसकी तुलना में, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) के 60 में से केवल तीन असफल मिशन रहे हैं, और उत्तराधिकारी एलवीएम-3 को अपने सात मिशनों में कोई विफलता नहीं मिली है, जो जीएसएलवी के लिए एक सफल प्रक्षेपण प्राप्त करने के महत्व को दर्शाता है।

आरबीआई को ऋण-से-मूल्य मानदंडों की जांच करनी चाहिए: स्वर्ण ऋण कंपनियां

📊 मूल्य पर ऋण (एलटीवी) अवधारणा:
मूल्य पर ऋण (एलटीवी) अनुपात संपार्श्विक के रूप में उपयोग की जाने वाली संपत्ति के मूल्य पर ऋण राशि के अनुपात को मापता है, जो ऋणदाताओं के लिए धन उधार देने के जोखिम का आकलन करने के लिए एक प्रमुख मीट्रिक के रूप में कार्य करता है। कम एलटीवी ऋणदाता के लिए कम जोखिम का संकेत देता है, जबकि उच्च एलटीवी अधिक जोखिम का संकेत देता है।

📝सूत्र:
एलटीवी = (ऋण राशि / संपार्श्विक मूल्य) * 100%

💰 व्याख्या:
कम एलटीवी (50% से कम): ऋणदाता के लिए कम जोखिम का संकेत देता है, जिसके परिणामस्वरूप संपार्श्विक मूल्य ऋण राशि से काफी अधिक होने के कारण संभावित रूप से बेहतर ऋण शर्तें और ब्याज दरें होती हैं।
उच्च एलटीवी (80% से अधिक): ऋणदाता के लिए उच्च जोखिम का संकेत देता है, जिससे संभावित रूप से उच्च ब्याज दरें, सख्त ऋण शर्तें, या अतिरिक्त संपार्श्विक की आवश्यकता होती है क्योंकि ऋण राशि संपार्श्विक मूल्य के करीब या उससे अधिक हो जाती है।

🏦अनुप्रयोग:
आमतौर पर सुरक्षित ऋणों के लिए उपयोग किया जाता है, जैसे कि बंधक (गृह ऋण), ऑटो ऋण और कुछ व्यावसायिक ऋण, ऋणदाता ऋण के लिए पात्रता निर्धारित करने, ब्याज दरें और ऋण की शर्तें निर्धारित करने और यह तय करने के लिए एलटीवी का उपयोग करते हैं कि निजी बंधक बीमा की आवश्यकता है या नहीं (पीएमआई) बंधक के लिए।

📈महत्वपूर्ण कारक:
एलटीवी सीमाएं: ऋण के प्रकार, साख योग्यता और अन्य कारकों के आधार पर विभिन्न उधारदाताओं की अपनी एलटीवी सीमाएं हो सकती हैं।
समय के साथ एलटीवी बदलता है: जैसे-जैसे ऋण चुकाया जाता है और संपार्श्विक मूल्य बदलता है, एलटीवी कम हो जाएगा, जो इस मीट्रिक की गतिशील प्रकृति को दर्शाता है।